पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-डी.एल. (एन.)/084/2012-14 (1) इस अंक का मूल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

# युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाष : 9810117464, 9868051444

राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. अनिल आर्य रविवार 11 नवम्बर 2012 को निम्न कार्यक्रमानुसार सम्बोधित करेंगे

प्रातः 9:00 बजे
आर्य समाज बैंक एन्कलेव, पूर्वी दिल्ली

प्रातः 10:30 बजे
आर्य समाज विशाखा एन्कलेव, दिल्ली

दोपहर 2:00 बजे
आर्य समाज शक्ति नगर, दिल्ली

सायं 4:00 बजे
आर्य समाज रमेश नगर दिल्ली

कृपया अपने निकट की बैठक में अवश्य पहुंचे

वर्ष-29 अंक-11 कार्तिक-2069 दयानन्दाब्द 189 1 नवम्बर से 15 नवम्बर 2012 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48रु.
E-mail : aryayouth@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

## सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य प्रतिनिधि महासम्मेलन सौल्लास सम्पन्न

### राष्ट्रीय समस्याओं के लिए आर्य समाज जन आन्दोलन करेगा -आर्य नेता स्वामी आर्य वेश

नई दिल्ली। आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में दिनांक 20 व 21 अक्टूबर 2012 को दो दिवसीय "अन्तर्राष्ट्रीय आर्य प्रतिनिधि सम्मेलन का कुलाची हंसराज मॉडल स्कूल, अशोक विहार दिल्ली में आयोजन किया गया। सम्मेलन में देश व विदेश से लगभग 3500 आर्य प्रतिनिधि सम्मलित हुए। सार्वदेशिक सभा के संयोजक आर्य नेता स्वामी आर्य वेश ने कहा कि आर्य समाज राष्ट्रीय समस्याओं को लेकर जन आन्दोलन करेगा। उन्होंने कहा कि भ्रष्ट्राचार आज चरम सीमा पर है, कन्या भ्रूण हत्या, किसानों द्वारा आत्म हत्या, पाखण्ड-अन्धविश्वास बढ़ रहे हैं, आर्य जन अपने-अपने क्षेत्र में जाकर सामाजिक मुद्दों को लेकर जनजागरण व आन्दोलन चलायेगे।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य ने कहा कि सरकारों की नीतियां वर्ग विशेष के तुष्टिकरण का काम कर रही हें जो कि राष्ट्रीय एकता व अखण्डता के लिए घातक कारी है,परिणाम स्वरूप आंतकवाद व अलगाववाद बढ़ रहे है। आर्य युवक समान आचार सहिता के लिए कार्य करेंगे।

आर्य नेता स्वामी अग्निवेश ने कहा कि मांसाहार पर्यावरण के लिए खतरा बन चुका है, किसी भी प्राणी का वध बन्द होना चाहिये। सार्वदेशिक सभा के अध्यक्ष स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती (चम्बा) ने कहा कि स्वच्छ राजनीति आज के समय की मांग है, लोग राजनीतिज्ञों से निराश हो चुके है, आर्य समाज अच्छे चरित्रवान लोगों को राजनीति में लाकर उसका स्तर सुधारेगा। इस अवसर पर आर्य नेता मायाप्रकाश त्यागी, स्वामी विश्वानन्द (मथुरा), गुरूकुल कांगड़ी हरिद्वार के कुलपति प्रो.स्वतन्त्र कुमार, पूर्व कुलपति डा.धर्मपाल, सांसद मेनका गांधी, अमेरिका से पधारे गिरीश खोसला, दक्षिण अफ्रीका से डा.राम विलास, कनाडा से प्रेम भाटिया, हालेण्ड से सुरेन्द्र महाबली, आर. एस.तोमर एडवोकेट, सत्यव्रत सामवेदी (जयपुर), ऐमिटी विश्वविद्यालय के अध्यक्ष डा.अशोक कुमार चौहान, प्रो. विठ्ठलराव आर्य (हैदराबाद), लखनऊ से देवेन्द्रपाल वर्मा, सुभाष आर्य (जम्मू), आचार्य यशपाल (हरियाणा), ओमप्रकाश आर्य (अमृतसर) वैद्य इन्द्रदेव, श्याम कुमार, भूपनारायण शास्त्री (पटना), पूर्णचन्द्र आर्य, (रान्ची), दलवीर राघव, (मध्य भारत), लक्ष्मणदास आर्य, (मध्य प्रदेश), गोविन्दसिंह भण्डारी, (बागेश्वर), रामपाल शास्त्री स्वामी धर्ममुनि, (बहादुरगढ), स्वामी ओमवेश (बिजनौर), स्वामी रामवेश (जीन्द), स्वामी चन्द्रवेश (गाजियाबाद), स्वामी दिव्यानन्द (हरिद्वार), स्वामी यतिश्वरानन्द (विधायक हरिद्वार), स्वामी धर्मानन्द सरस्वती (उड़ीसा), कै.रूद्रसेन सन्धु (हरिभूमि), दर्शन अग्निहोत्री, राजीव कुमार परम, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, महेन्द्रभाई, स्वामीगुरूकुलानन्द (पिथौरागढ़), आचार्य नन्दकिशोर, (नेपाल), मनोहरलालचावला (सोनीपत), स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती (पलवल), चौ. हरिसिंह सैनी, हिसार, सतेन्द्र मोहन कुमार (करनाल), डा.सोमदेवशास्त्री (चण्डीगढ़) विरजानन्द (अलवर), स्वामी ऋतस्पति (होशगांबाद), रमाकान्त सारस्वत (आगरा), राष्ट्रीय कवि सारस्वत मोहन मनीषी, विजय गुप्त, आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार (इन्दौर), मधुरप्रकाश आर्य, स्वामी कर्मपाल (सर्वखाप), नरेन्द्र चौधरी (बुलन्दशहर), महेन्द्र सिंह आर्य (गुड़गांव), डा. महेन्द्र नागपाल (भाजपा), प्राची आर्या (बागपत), पूनम व प्रवेश (रोहतक), ईश आर्य (हिसार), रामकृष्ण शास्त्री (बहरोड़), अमरदेव शास्त्री, पं. मेघश्याम बेदालंकार, श्रीमती शकुन्तला आर्या (पूर्व महापौर), गवेन्द्र शास्त्री, सन्तोष, राम कुमार सिंह, सौरभ गुप्ता, यशोवीर आर्य, चन्द्र शेखर शास्त्री, जगदीश आर्य, राम सिंह (जोधपुर), सुखदेव भगत (जालन्धर), धनश्याम प्रेमी, सहदेव बेधड़क आदि ने अपने विचार रखे।

कुलाची हंसराज मॉडल स्कूल अशोक विहार, दिल्ली में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य प्रतिनिधि सम्मेलन में उपस्थित विशाल जनसमूह

# हिन्दी के ह्रास का सबब बनी 'हिंग्लिश'

- राजेश कश्यप

(पिछले अंक का शेष)

हिन्दी के सरलीकरण हेतु सरकार द्वारा उठाए गए इस कदम की जहां कई वरिष्ठ साहित्यकारों और बुद्धिजीवियों ने कड़ी आपत्ति जताई है, वहीं कई विद्वानों ने एकदम चुप्पी साध रखी है। वे खुलकर न तो इस कदम की आलोचना कर रहे हैं और न ही स्वागत। यदि वे इसकी आलोचना करें तो तर्कशास्त्री अंग्रेजी व अन्य भाषाओं के ऐसे शब्दों की झड़ी लगा देंगे, जिनका हिन्दी अनुवाद–धलिप्यांतर न केवल अत्यंत कठिन होगा, बल्कि आम बोलचाल में भी उनका सहज प्रयोग संभव नहीं होगा। सर्वविद्यित है कि आज हिन्दी के बड़े–बड़े पैरवीकार भी आम तौरपर रेल व ट्रेन को 'लौहपथगामिनी', सिगरेट को 'धूम्रदण्डिका', टाई को 'कंठभूषण', साईकिल को 'द्विचक्रवाहन', फाऊंटेन पेन को 'झरना लेखनी', बॉल पेन को 'कंदुक लेखनी' आदि उच्चारित नहीं करते हैं। अनपढ़ व्यक्ति भी सामान्य तौरपर प्रयोग में आने वाले अंग्रेजी शब्दों बस, टैक्सी, पर्स, सूट, टीवी, रेडियो, रिमोट, पेंट, रेलवे स्टेशन, टिकट, मोटरसाईकिल, पुलिस, बिल, लिप्ट, कोर्ट, केस, जज, क्लर्क आदि को हिन्दी की बजाय अंग्रेजी में ही उच्चारित करता है। आज आपसी रिश्ते भी अंग्रेजी में तब्दील हो गए हैं। पिता को 'पापा/डैडी/डैड', माता को 'मम्मी/मॉम', चाचा–ताऊ को 'अंकल' कहना आम बात हो गई है। इन सब तथ्यों से हिन्दी के सरलीकरण पर चुप्पी साधने वाली विद्वान मण्डली बखूबी परिचित है। यदि वे अपनी चुप्पी को तोड़कर हिन्दी के सरकारी सरलीकरण का स्वागत करते हैं तो वे सबसे पहले अपनी ही बिरादरी की आलोचनाओं के शिकार हो जाएंगे। इसके बाद वे इस तथ्य से भी एकदम सहमत होंगे कि हिन्दी–अंग्रेजी के मिश्रित रूप 'हिंग्लिश' से सर्वाधिक ह्रास हिन्दी का ही होगा।

ऐसे में स्पष्ट है कि हिन्दी का सरकारी सरलीकरण हिन्दी साधकों के लिए न तो उगलते बन पड़ रहा है और न ही निगलते बन पड़ रहा है। मीडिया ने तो हिन्दी के समक्ष पैदा हुए इस धर्मसंकट से पहले ही 'हिंग्लिश' को बखूबी आत्मसात कर लिया था। आज लगभग सभी हिन्दी समाचार पत्र–पत्रिकाओं, टेलीविजन के समाचार चैनलों, मनोरंजन चैनलों, रेडियो केन्द्रों आदि में 'हिंग्लिश' का तड़का जमकर लग रहा है। बॉलीवुड में तो 'हिंग्लिश' की तूती बोल रही है। आज बॉलीवुड में हिन्दी फिल्मों के नाम भी स्पष्ट तौर पर अंग्रेजी में धड़ल्ले से रखे जा रहे हैं और ऐसी फिल्में अच्छा खासा मुनाफा भी कमा रही हैं। उदाहरण के तौरपर, 'द डर्टी पिक्चर', 'रॉकस्टार', 'रास्कल', 'रेस', 'रेडी', 'बॉडीगार्ड', फैशन', 'नो वन किल्ड जेसिका', 'वांटेड', 'माई नेम इज खान', 'काईट्स', 'थ्री इडियट्स', 'एजेंट विनोद', 'विक्की डोनर', 'पेज थ्री', 'ब्लड मनी', 'ऑल द बैस्ट', 'कॉरपोरेट', 'डू नोट डिस्टर्ब', 'नो एन्ट्री', 'पार्टनर', आदि अंग्रेजी नाम वाली हिन्दी फिल्मों की लंबी सूची देखी जा सकती है।

दरअसल यह 'हिंग्लिश' हिन्दी व अंग्रेजी शब्दों का मिलाजुला मिश्रित रूप है। यह नया रूप हिन्दी भाषा के लिए 'धीमे जहर' का काम कर रहा है, इसमें कोई दो राय नहीं होनी चाहिए। निश्चित तौर पर इससे हिन्दी के हितों को न केवल जबरदस्त आघात लग रहा है, बल्कि हिन्दी का यह ह्रास उसके अस्तित्व को भी खतरे में डाल सकती है। बड़ी विडम्बना का विषय है कि भूमण्डलीकरण के इस दौर में सैंकड़ों भाषाएं भारी संक्रमण के दौर से गुजर रही हैं। वैश्विक भाषाओं के मूल अस्तित्व पर 'ग्लोबिश' भाषा का ग्रहण लगने लगा है। 'ग्लोबिश' ऐसी भाषा जिसमें इंग्लिश के उतने ही शब्द इस्तेमाल किये जाते हैं, जिससे पूरी दुनिया का काम चल जाए। 'ग्लोबिश' में मात्र डेढ़ हजार ऐसे इंग्लिश शब्द प्रयुक्त हो रहे हैं, जिन्हें सीखकर कथित तौरपर पूरी दुनिया में अंग्रेजी में सहज संवाद स्थापित किया जा सकता है। फ्रांस, कोरिया और स्पेन आदि में इन दिनों 'ग्लोबिश' भाषा ने धूम मचाई हुई है और स्थानीय भाषाओं की जड़ें हिलाई हुई हैं।

वैश्विक स्तर पर जहां 'ग्लोबिश' अपने पाँव बड़ी तेजी से पसार रही है, वहीं चीन में 'चिंग्लिश' चीनी भाषा के लिए चिंता और चुनौती का सबब बनी हुई है और भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी 'हिंग्लिश' का शिकार हो गई है। 'ग्लोबिश', 'चिंग्लिश', 'हिंग्लिश, 'फिंग्लिश' आदि मिश्रित संकर श्रेणी की भाषाओं के बढ़ते संक्रमण के बीच दुनिया की कुल 6900 भाषाओं में से 3500 भाषाएं विलुप्ति की कगार पर पहुंच चुकी हैं। संयुद्र राष्ट्र द्वारा 21 फरवरी, 2009 को 'अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस' के अवसर पर जारी रिपोर्ट के मुताबिक इनमें सबसे गंभीर स्थिति भारत की है, जहां 196 भाषाएं विलुप्ति की कगार पर पहुंच चुकी हैं। इसके बाद अमेरिका का स्थान आता है, जिसकी 192 भाषाओं पर विलुप्त होने का खतरा मंडरा रहा है। गतवर्ष सितम्बर, 2011 में राज्यसभा में मानव संसाधन विकास राज्यमंत्री डी. पुण्डेश्वरी ने लिखित जवाब में जानकारी देते हुए बताया था कि भारत में पिछले छह दशकों के दौरान नौ भाषाएं विलुप्त हो चुकी हैं और 103 लुप्त होने की कगार पर हैं। इसके साथ ही उन्होंने यह भी बताया था कि देश में 84 भाषाएं ऐसी हैं, जिनको बोलने वालों की संख्या में निरंतर गिरावट आ रही है। सरकार इन भाषाओं के निरंतर संरक्षण के लिए प्रयासरत है। ऐसे में सबसे गंभीर सवाल यही उठता है कि क्या 'हिंग्लिश' के कारण हिन्दी का भी ऐसा ही हश्र हो सकता है?

यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि वैश्विक स्तर पर तेजी से पाँव पसार रही हिन्दी एकाएक 'हिंग्लिश' के भयंकर संक्रमण का शिकार हो गई है। हिन्दी को वैज्ञानिक व प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में स्थापित करने, रोजगारदायक बनाने, विश्व स्तरीय श्रेष्ठ साहित्य को हिन्दी में उपलब्ध करवाने, साहित्यकारों को मान–सम्मान देने जैसे अनेक हिन्दी समृद्धि के अचूक लक्ष्य निर्धारित किये गये। इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए चल रहे सतत संघर्ष के बीच 'हिंग्लिश' ने सभी रास्तों को एकदम संकरा और जटिल बना दिया है। अब हिन्दी के समक्ष 'हिंग्लिश' सबसे बड़ी विकट चुनौती बनकर खड़ी हो गई है। सरकारी तंत्र से लेकर लोकतंत्र के चौथे स्तम्भ मीडिया तक, बॉलीवुड से लेकर गाँव की गलियों तक और आम आदमी से लेकर बुद्धिजीवियों के एक बड़े धड़े तक 'हिंग्लिश' का बोलबाला स्थापित हो चुका है। ऐसे में हिन्दी पर 'हिंग्लिश' का हमला कितना घातक सिद्ध हो सकता है, इसका सहज अनुमान लगाया जा सकता है। चुंकि, हिन्दी हिन्द की राष्ट्रभाषा है तो हर हिन्दुस्तानी का यह नैतिक फर्ज बनता है कि वह हिन्दी के हित में अपना समुचित योगदान दे। हिन्दी को सरल तो बनाया जाए, लेकिन हिन्दी के हितों को ताकपर रखकर नहीं। हिन्दी के विद्वान व विदुषियों को आगे बढ़कर ऐसा रास्ता निकालना अथवा सुझाना चाहिए, जिससे 'सांप भी मर जाए और लाठी भी ना टूटे।

**हिन्दी के 12 कटु सत्य:–** 1.हिन्दीभाषी अभिजन की हिन्दी से दूरी बढ़ी है। 2. राजभाषा हिन्दी के नाम पर केन्द्र सरकार करोड़ों रूपये खर्च करती है लेकिन उसका भाषायी, सांस्कृतिक, अकादमिक और प्रशासनिक रिटर्न बहुत कम है। 3.इस दिन केन्द्र सरकार के ऑफिसों में मेले–ठेले होते हैं और उनमें यह देखा जाता है कि कर्मचारियों ने साल में कितनी हिन्दी लिखी या उसका व्यवहार किया। हिन्दी अधिकारियों में अधिकतर की इसके विकास में कोई गति नजर नहीं आती। संबंधित ऑफिस के अधिकारी भी हिन्दी के प्रति सरकारी भाव से पेश आते हैं। गोया ,हिन्दी कोई विदेशी भाषा हो। 4.केन्द्र सरकार के ऑफिसों में आधुनिक कम्युनिकेशन सुविधाओं के बावजूद हिन्दी का हिन्दी भाषी राज्यों में भी न्यूनतम इस्तेमाल होता है। 5.हिन्दीभाषी राज्यों में और 10 वीं और 12वीं की परीक्षाओं में अधिकांश हिन्दी भाषी बच्चों के असंतोषजनक अंक आते हैं. हिन्दी भाषा अभी तक उनकी प्राथमिकताओं में सबसे नीचे है। 6.ज्यादातर मोबाइल में हिन्दी का यूनीकोड़ फॉण्ट तक नहीं है। ज्यादातर शिक्षित हिन्दी भाषी यूनीकोड फॉण्ट मंगल का नाम तक नहीं जानते। ऐसी स्थिति में हिन्दी का विकास कैसे होगा ? 7.राजभाषा संसदीय समिति और उसके देश–विदेश में हिन्दी की निगरानी के लिए किए गए दौरे भारतीय लोकतंत्र के सबसे बड़े अपव्ययों में से एक है. 8.विगत 62 सालों में हिन्दी में पठन–पाठन,अनुसंधान और मीडिया में हिन्दी का स्तर गिरा है। 9.राजभाषा संसदीय समिति की सालाना रिपोर्ट अपठनीय और बोगस होती हैं। 10.भारत सरकार के किसी भी मंत्रालय में मूल बयान कभी हिन्दी में तैयार नहीं होता। सरकारी दफ्तरों में हिन्दी मूलत: अनुवाद की भाषा मात्र बनकर रह गयी है। 11.हिन्दी दिवस के बहाने भाषायी प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा मिला है इससे भाषायी समुदायों में तनाव पैदा हुआ है। हिन्दी भाषी क्षेत्र की अन्य बोलियों और भाषाओं की उपेक्षा हुई है। 12. सारी दुनिया में आधुनिक भाषाओं के विकास में भाषायी पूंजीपतिवर्ग या अभिजनवर्ग की बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। हिन्दी की मुश्किल यह है कि हिन्दी भाषी पूंजीपतिवर्ग का अपनी भाषा से प्रेम ही नहीं है। जबकि यह स्थिति बंगला, मराठी, तमिल, मलयालम, तेलुगू आदि में नहीं है। वहां का पूंजीपति अपनी भाषा के साथ जोड़कर देखता है। हिन्दी में हिन्दीभाषी पूंजीपति का परायी संस्कृति और भाषा से याराना है।

हिंदी का सफर अर्श से फर्श तक.....

हमारे शासन का दोष: (क) भाषा के निष्णातों पर राष्ट्र–भाषा का निर्णय ना छोडकर, राजनीति के बलपर उसका निर्णय। (ख) जिस संस्कृत नें सारे प्रगत संसार के देशों में भारी योगदान दिया, उस संस्कृत की घोर उपेक्षा करना। (ग) राजनीति से अलिप्त रहकर, क्षुद्र स्व भाषा के स्वार्थ से प्रेरित ना होते हुए, राष्ट्रीय निष्ठा से निर्णय लेनेवाले विद्वानों की भी उपेक्षा? (घ) नेत्र हीन अंधा नेतृत्व। और अंध श्रद्धा से, और घोर सीमातक व्यक्ति निष्ठा से प्रेरित जनता। डॉक्टर जब रोग का निदान करता था, उसी को पहले से ही क्या निर्णय होना चाहिए, इस का कड़ा निर्देश दिया गया।

**परिणाम:** हिन्दी जंगल की वनस्पतियों की भाँति या एक अनाथ की तरह विकसित हुयी, और फैली, जिसकी कोई दिशा निश्चित नहीं। सिनेमा ने उसको बाघ बना दिया। (अपने पुत्र पुत्रियों को भी ऐसे ही पाल कर आगे बढा के दिखाइए।) और जब उसकी खिचडी बन चुकी है, तो अब तर्क दिया जा रहा है। जो चल रहा है, उसे ही स्वीकार कर लो। जापान (जिसकी चित्र लिपि बहुत ही कठिन है) उस ने भी विश्व के अनेक भाषी देशों में स्वतंत्रता के बाद अपने विद्वानों की टोलियां भेजी। और रूसी, फ्रांन्सीसी, अंग्रेजी इत्यादि अनेक भाषाओं से जापानी में सैंकडो अनुवाद करवाए। कितनी पाठ पुस्तकों के अनुवाद किए गए। इजरायल ने, चीन ने ऐसा ही कुछ किया। पर जिसकी सारा संसार ईर्षा करता है, उस संस्कृत की धरोहर वाले हम, पिछड़े हैं, क्यों?

जिस संस्कृत के कारण प्राच्य विद अपनी भाषा का नाम उससे जुडे, इस लिए उसे इंडो–जर्मन, इंडो–युरोपियन, इन्डो–आर्यन, या इंडो–इरानियन कहकर अपना सम्बंध उससे जोडना चाहते थे पर, प्रत्येक में 'इन्डो' को कोई हटा नहीं सकता था, क्यों कि वह 'संस्कृत' का ही बडा भव्य–दिव्य योगदान था।

पर उसी संस्कृत की धरोहर वाले हम इतने मूर्ख निकले, कि आज न उस धरोहर का उचित उपयोग कर पाए, ना हमारी भारत माँ के माथे की बिन्दी, जो हिन्दी है, उसको कोई सम्मान दिला पाए। न भारत में भी उसे राष्ट्र भाषा का सम्मान आज भी देते हैं। हम राह देख रहे हैं, कि कब समाचार आता है, कि (अब संस्कृत का उपयोग 'पश्चिम' कम्प्युटर में करने लगा है। आज भी हमारे पास विद्वान संस्कृतज्ञों का बड़ा भारी अकाल है। और भयंकर दोषी है, देश का राजनैतिक नेतृत्व। अंत में, अंग्रेजी के पागलों से निम्न प्रश्न के, उत्तर की अपेक्षा: कि अनुमान कर के बताइए, कि, महत प्रयास कर के कितने 'अंग्रेजो को' आप हिन्दी माध्यम से पढ़ाकर निष्णात बना सकोगे? **जय भाषा भारती।**

# अन्तर्राष्ट्रीय आर्य प्रतिनिधि महासम्मेलन की सचित्र झलकियां

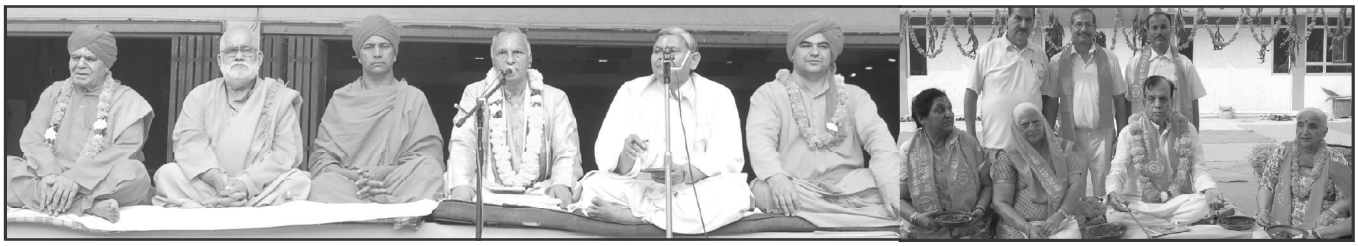

यज्ञ के ब्रह्मा डॉ. सोमदेव शास्त्री (मुम्बई) यज्ञ करवाते हुए। बाएं से मंच पर स्वामी चन्द्रवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती (गौतमनगर), स्वामी ऋतस्पति (हौशंगाबाद), आचार्य प्रेम पाल शास्त्री (यज्ञ संयोजक) व स्वामी विश्वानन्द जी (मथुरा)। मुख्य यज्ञमान श्रीमती सरोज-श्री दर्शन अग्निहोत्री, माता सुशीला आर्या आदि

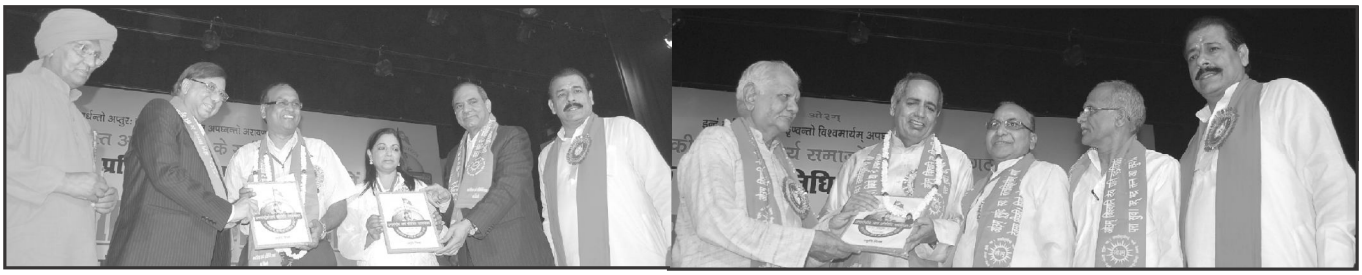

दक्षिण अफ्रीका आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान प्रा. राम बिशराम रामविलास (डरबन) का सपत्निक स्वागत करते डॉ. अशोक कुमार चौहान व श्री आनन्द चौहान। द्वितीय चित्र में अमेरिका आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान श्री गिरीश खोसला का स्वागत करते श्री सत्यव्रत सामवेदी (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान), श्री ओम प्रकाश आर्य, (अमृतसर), प्रो. विठ्ठल राव आर्य (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, आन्ध्र प्रदेश) साथ में सम्मेलन के संयोजक डॉ. अनिल आर्य।

सार्वदेशिक सभा ( कै. देवरत्न ग्रुप) के कार्यकारी प्रधान श्री आनन्द प्रकाश आर्य (कलकत्ता) का स्वागत करते डॉ. अनिल आर्य व स्वामी आर्यवेश जी। द्वितीय चित्र में स्वामी धर्मानन्द सरस्वती (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उड़ीसा) का स्वागत करते श्री माया प्रकाश त्यागी (स्वागताध्यक्ष व कोषाध्यक्ष, आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश), डॉ. अनिल आर्य, श्री प्रकाशवीर शास्त्री। तृतीय चित्र में स्वामी ओमवेश जी (पूर्व मन्त्री उ.प्र. सरकार) का स्वागत करते डॉ. अनिल आर्य, श्री देवेन्द्र पाल वर्मा (प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.) व प्रो. विठठ्ल राव आर्य (हैदराबाद)

स्वामी विवेकानन्द सरस्वती (प्रभात आश्रम मेरठ) का स्वागत करते डॉ. अनिल आर्य, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी ( हापुड़), श्री मायाप्रकाश त्यागी, श्री रमाकान्त सारस्वत (आगरा) व स्वामी सौम्यानन्द जी (मथुरा)। द्वितीय चित्र में वैदिक विद्वान आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय का स्वागत करते डॉ. अनिल आर्य व स्वामी आर्यवेश जी। तृतीय चित्र में आचार्य परमदेव जी मीमांसक का स्वागत करते ब्रह्मचारी दीक्षेन्द्र व श्री वीरेन्द्र योगाचार्य

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के मन्त्री श्री एस.के. शर्मा का स्वागत करते श्री मायाप्रकाश त्यागी, स्वामी आर्यवेश जी व डा. अनिल आर्य। द्वितीय चित्र में हॉलैण्ड से श्री देवानन्द जी के साथ पधारे आर्य प्रतिनिधि मंडल के अभिनन्दन का दृश्य।

## महर्षि दयानन्द के बलिदान दिवस पर भव्य संगीत संध्या: एक शाम ऋषि दयानन्द के नाम

**वीरवार 15 नवम्बर 2012, सायं 4 से 8 बजे तक, दिल्ली हाट, पीतमपुरा, दिल्ली**

**हजारों की संख्या में सपरिवार पधार कर ऋषि दयानन्द को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करें**

दिल्ली चलो- आर्यो दिल्ली चलो- आर्यो दिल्ली चलो- आर्यो

# केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 34वें वार्षिकोत्सव पर

सानिध्य: स्वामी सुमेधानन्द जी, स्वामी दिव्यानन्द जी, स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी धर्ममुनि जी, स्वामी प्रणवानन्द जी
आचार्य अखिलेश्वर जी महाराज के ब्रह्मत्व व डॉ. अशोक कुमार चौहान की अध्यक्षता में

# 251 कुण्डीय विराट यज्ञ व अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन

## दिनांक: 25, 26, 27, जनवरी 2013 (शुक्र, शनि व रविवार)

स्थान: रामलीला मैदान, अशोक विहार-1, दिल्ली (निकट मैट्रो स्टेशन कन्हैया नगर)

विराट् शोभा यात्रा, शुक्रवार 25 जनवरी 2013 प्रात: 10:00 बजे प्रारंभ होगी।

दिल्ली से बाहर के आने वाले आर्य बंधु आवास व्यवस्था हेतु शीघ्र सूचित करें व इस रचनात्मक कार्यक्रम हेतु अपनी दान राशि क्रॉस चैक/ड्राफ्ट द्वारा ''केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली'' के नाम कार्यालय के पते पर भिजवाने की कृपा करें। आप ऋषि लंगर के लिए आटा, दाल, चावल, चीनी, घी, रिफाईन्ड, सब्जी, मसाले आदि खाद्य सामग्री देकर पुण्य के भागी बनें।

आर्य महासम्मेलन में सम्मानित आर्य नेता डॉ. अशोक कुमार चौहान के साथ बाएं से श्रीमती विमला ग्रोवर (फरीदाबाद), श्री सतेन्द्र मोहन कुमार (करनाल), श्री मनोहर लाल चावला (सोनीपत), श्री सुरेन्द्र कोहली (दिल्ली)। द्वितीय चित्र में पं. सत्य पाल पथिक (अमृतसर) का अभिनन्दन करते डॉ. अनिल आर्य, स्वामी धर्मानन्द जी व प्रो. स्वतंत्र कुमार (कुलपति गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार)। तृतीय चित्र में कै. रूद्र सेन सिन्धु का अभिनन्दन करते श्री मायाप्रकाश त्यागी व स्वामी अग्निवेश।

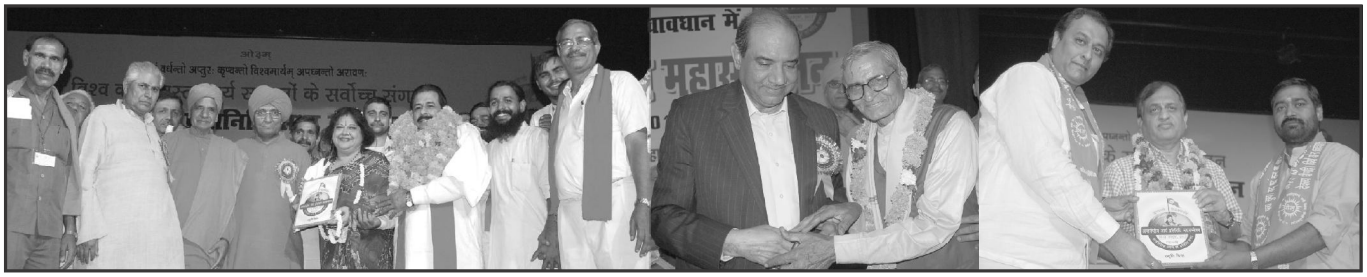

परिषद अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य व श्रीमती प्रवीण आर्या का अभिनन्दन करते श्री मायाप्रकाश त्यागी, स्वामी सुमेधानन्द जी, स्वामी अग्निवेश जी, ब्र. दीक्षेन्द्र व श्री महेन्द्र भाई जी। द्वितीय चित्र में श्री जयनारायण अरूण (मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र.) का स्वागत करते श्री आनन्द चौहान। तृतीय चित्र में श्री अशोक आर्य ( सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर, राजस्थान) का स्वागत करते श्री देवेन्द्र भगत व श्री प्रकाशवीर शास्त्री।

आर्य महासम्मेलन में सम्मानित महानुभाव बाएं से श्री पूर्ण चन्द आर्य (मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा रांची झारखण्ड), श्री गोविन्द सिंह भण्डारी (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड), श्री सुभाष आर्य (जम्मू), श्री आनन्द प्रकाश आर्य (हापुड़), कै. अशोक गुलाटी (नोएडा), श्री प्रवीण आर्य (गाजियाबाद)

**महासम्मेलन को सफल बनाने पर सभी संन्यासियों, विद्वानों, दानदाताओं, कार्यकर्त्ताओं व केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के साथियों का हार्दिक धन्यवाद**

### शोक समाचार: श्री भजन प्रकाश आर्य का निधन

1. श्री भजन प्रकाश आर्य, सरस्वती विहार, दिल्ली का गत 20.10.2012 को निधन हो गया।
2. श्री नन्दलाल पाहवा (राधेपुरी, दिल्ली) का गत 29.10.2012 को निधन हो गया।
3. श्री साजन पेशावरी (नोएडा) का गत 29.10. 2012 को निधन हो गया।
4. श्री भीम सेन आर्य (अशोक नगर, दिल्ली) का गत दिनों निधन हो गया।

दिवंगतों की निधन पर विनम्र श्रद्धांजलि।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मयंक प्रिंटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548504 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970